मोमासर 10 अप्रेल : राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने नित्य प्रवर्चन में संबोधि ग्रंथ पर चर्चा करते हुए कहा कि वैयक्तिक और सामुदायिक दो प्रकार हैं । कर्म वैयक्तिक है और व्यवस्था सामुदायिक होती है । ईश्वरवादी कहता है कि सब कुछ ईश्वर करता है और कर्मवादी कहता है सब कुछ कर्म से होता है । तो दोनों में कोई अन्तर नहीं रहता । कर्म का कर्त्ता इन्सान स्वयं होता है और उसको भोगता भी वह स्वयं है । कर्मवाद का गहरा अध्ययन किया जाये वो अनेक वैज्ञानिक तथ्य सामने आ सकते हैं । जैनाचार्य ने जितना कर्मवाद पर काम किया है उतना और किसी ने नहीं किया । उन्होने कहा कि भगवान महावीर के समय दासप्रथा का युग था । उस समय आदमीयों को खरीदा जाता था । इस दासप्रथा पर सर्वप्रथम विरोध करने का श्रय भगवान महावीर को जाता है । उसके बाद गौतम बुद्ध ने इस पर प्रहार किया । श्रमण परम्परा के इन दोनो महापुरूषों ने दासप्रथा को समाप्त करने पर जोर दिया ।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि आचार्य तुलसी द्वारा चलाए नया मोड की चर्चा करते हुए कहा कि दासप्रथा कर्मकृत नहीं है, सामाजिक व्यवस्था है । सामाजिक व्यवस्था को बदलना उचित मानता हूँ । जो व्यवस्था इस युग के लिए उपयोगी नहीं है तो उसको बदलने में संकोच नहीं होना चाहिए । अगर रूढि बना ली जायेगी तो समस्याएं बढती जायेगी ।

नक्लवाद पर बोलते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा की वर्तमान में जो हिंसा हुई है और जवान मारे गए हैं इस प्रकार की हिंसा करना अच्छी बात नहीं है । जब तक समाज में विषमता रहेगी तब तक इस प्रकार की हिंसा होती रहेगी । आज जहां एक और शादी विवाह उत्सवों में करोडों रूपयों का अपव्यय होता है वहीं देश में करोडों बच्चे कुपोषण का शिकार हो रहे हैं उनको एक वक्त को खाना भी नहीं मिलता । यह हिंसा को जन्म देने के कारण है और इनसे हिंसा बढेगी इस प्रकार की हिंसा को प्रतिक्रियात्मक हिंसा कहते हैं । जो मनुष्य की कमजोरी है हम दूसरे के सुख को देखकर दुर्बल होते हैं जो गलत है । समाज की इस विषमता को मिटाए बगैर हिंसा पर काबू प्राप्त करना मुश्किल है । आज नक्लवाद है कल कोई और भी हो सकता है । आचार्य प्रवर ने कहा कि सत्ता पर पहुंचते के बाद नेता भ्रष्टाचार में लिप्त हो जाते हैं । इस पर सबकी प्रतिक्रिया रहती है । पर मैं उनसे पुछना चाहता हूँ नेता आते कहां से । समाज से ही आते हैं । जब तक समाजिक व्यवस्था को नहीं बदला जायेगा तब तक वे भ्रष्टाचार में न फंसें ऐसा कैसे हो सकता है । समाज आज नेतृत्व विहिन हो गया है । पहले समाज में नेतृत्व चलता था उसके द्वारा दिये गए निर्णय पर सबकी सहमति होती थी । पर आज इतना सक्षम कोई नहीं है । इस नेतृत्व विहिन समाज में हिंसा का ताण्डव रूकेगा ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता । समाज में जहां भी कुरितियां व्याप्त है और उनके द्वारा हिंसा बढ रही है तो उसके कारणों को खोजना चाहिए ।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि सात्विक सुख का परिणाम अमृत के समान होता है जो सेवाजन्य, भक्तिजन्य होता है । गीता के 18वें अध्याय में कहा गया है कि इन्द्रिय और विषय के संयोग से मिलने वाला सुख राजस सुख होता है । आंखों के सामने मनोरम रूप आया, जिव्हा को स्वाद मिला तो इस प्रकार जो सुख की अनुभूति होती है वह राजस सुख होता है इसका परिणाम अच्छा नहीं होता । और यह उत्तम कोटि का सुख नहीं माना जाता । इन्द्रिय ज्ञान का माध्यम भी है और भोग का भी इन्द्रिय पांच प्रकार की होती है शब्द, रूप, गंध,रस और स्पर्श इन सब को मिलाकर कामभोग रस बनता है । जो राजस सुख को प्राप्त करता है वह आत्मिक सुख से दूर होता है । जो उत्तमतत्व की प्राप्ति करता है उसका विषयों के प्रति अनाकर्षण हो जाता है । साधना का आनन्द सात्विक सुख है और गृहस्थ में जो सुख है वह राजस सुख होता है । लेकिन गृहस्थ को भी एक अवस्था के साथ सात्विक सुख को पाने की कोशिस करनी चाहिए ।

युवाचार्य ने आचार्य महाप्रज्ञ का उदाहरण देते हुए कहा की आचार्य प्रवर ने मात्र दस वर्ष की अल्पआयु में सन्यासी जीवन को प्राप्त किया और सात्विक सुख को प्राप्त किया, वर्तमान में आचार्य प्रवर 90 वर्ष की आयु को प्राप्त कर चुके है, प्रवर ने अपने जीवन के अब तक 80 वर्ष साधुत्व प्राप्त कर लिया है और काई भी जैनाचार्य इतना लम्बे संयम को अब तक प्राप्त नहीं कर सका है । वह प्रभु से कामना करते है की उनका यह साधुत्वकाल और अधिक लम्बा हो । कार्यक्रम का संचालन पदमचंद पटावरी